विद्या सर्वस्य भूषणम
WELCOME

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- अर्थ
- परिभाषा
- समाजिक परिवर्तन की विशेषताएं
- समाजिक परिवर्तन के कारक
- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

सामाजिक परिवर्तन , समाज के आधारभूत परिवर्तनो पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत विषय है। इस प्रक्रिया में समाज की संरचना एवं कार्यप्रणाली का एक नया जन्म होता हैं। इसके अंतर्गत मूलतः प्रास्थिति, वर्ग ,स्तर ,तथा व्यवहार के अनेकानेक प्रतिमान बनते एवं बिगड़ते है। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन

आधुनिक संसार में प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है तथा विभिन्न समाजो ने अपने तरिके से इन विकासो को समाहित किया है, इनका उत्तर दिया है , जो कि सामाजिक परिवर्तनो में परिलक्षित होता है। इन परिवर्तनो की गति कभी तीव्र रही हैं कभी मंद। कभी - कभी ये परिवर्तन अति महत्वपूर्ण रहे है तो कभी बिल्कुल महत्वहीन। कुछ परिवर्तन आकस्मिक होते है, हमारी कल्पना से परे और कुछ एसे होते है जिसकी भविष्यवाणी संभव थी। कुछ से तालमेल बिठाना सरल है , जबकी कुछ को सहज ही स्वीकारना कठिन है। कुछ सामाजिक परिवर्तन स्पष्ट है व दृष्टिगत है , जबकि कुछ देखे नही जा सकते , उनका केवल अनुभव किया जा सकता है।

अर्थ

सामाजिक परिवर्तन मे दो शब्द है - प्रथम सामाजिक और दूसरा परिवर्तन। सामाजिक शब्द से आशय है - समाज से संबंधित ।

परिवर्तन शब्द का प्रयोग हम बहुधा करते है, किन्तु उसके अर्थ के प्रति बहुत सचेत नही होते है। परिवर्तन का अर्थ है किसी एक वस्तु चाहे वह भौतिक हो अथवा अभौतिक, में समय के साथ भिन्नता उत्पन्न होना । भिन्नता वस्तु के बाहरी स्वरुप मे हो सकती है अथवा आंतरिक संगठन, बनावट या गुण में। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह सर्वकालीन एवं सर्वव्यापी है। यह भौतिक एवं जैविक जगत में हो सकता है अथवा सामाजिक एवं सास्कृतिक जगत में।

नियोजन की परिभाषाएँ

1. **जॉनसन के अनुसार** – "अपने मौलिक अर्थ मे सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य होता है सामाजिक संरचना में परिवर्तन । "

2. **मैकाइवर व पेज के अनुसार** – "सामाजशास्त्री होने के नाते हमारि विशेष रुचि प्रत्येक रुप में सामाजिक संबंध से है। केवल सामाजिक संबंधो में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। "

3. **डेविड के अनुसार** – "सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्ही परिवर्तनो को समझते है, जो सामाजिक संगठन और कार्यो से घटित होता है। "

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं

1. परिवर्तन समाज का एक मौलिक तत्व है।
2. परिवर्तन की गति में भिन्नता होती है।
3. सामाजिक परिवर्तन को मापना संभव नही है।
4. सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी नही की जा सकती है।
5. सामाजिक परिवर्तन सार्वभौमिक है।
6. परिवर्तन अनिश्चित होता है।

सामाजिक परिवर्तन के कारक

- प्राकृतिक कारक
- आर्थिक कारक
- सांस्कृतिक कारक
- जनसंख्यात्मक कारक
- प्रौद्योगिकी कारक
- प्राणीशास्त्रीय कारक

निष्कर्ष

अतः हम यहाँ निष्कर्स के रुप में यह कह सकते है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है बिना परिवर्तन के कुछ भी नवीन होना असंभव है।परिवर्तन से ही समाज मे बदलाव आता है। परिवर्तन समाज में एक नयी किरण के साथ बदलाव लाकर आता है। समाज मे जो कार्य किये जाते है सब परिवर्तन की उद्‍्येश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। सामाजिक परिवर्तन में परिवर्तन के कारको विशेस महत्व है। परिवर्तन हर किसी के लिए आवश्यक है चाहे वह समाज हो या समाज के सदस्य क्योकि यह संसार परिवर्तन के नियम से संचालित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

लेखक	पुस्तक
❑ डी.डी. मिश्र	समाज कल्याण प्रशासन
❑ आर. नागराज	सामाजिक विकास
❑ विकिपीडिया	

Thank
You